POWERED BY---------महा गौरी कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान

COMPUTER OPERATOR & PROGRAMMING ASSITANT /CPCT.

FEATCHERS-

महा गौरी Introduces समझ Application For LIVE Online Master Classes Is An Incredibly Personalized Tutoring Platform For You, While You Are Staying At Your Home. We Have Grown Leaps And Bounds To Be The Best Online Tuition Website In Amarpatan With Immensely Talented Teachers, From The Most Reputed Institutions.

C.O.P.A

COMPUTER OPERATOR & PROGRAMMING ASSISTANT

ATUL PANDEY

HEAD OF THE INSTITUTION

POWERED BY-SAMAJH APP

Smart Accounting, E-Commerce, Cyber Security

- **Smart Accounting—**

What Is Accounting

लेखांकन शब्द प्रायः दो शब्दों लेख और अंकन से मिलकर बना है ! इसमें लेख का अर्थ लिखने से होता है ! और अंकन का अर्थ अंको से होता है अर्थार्त व्यापारिक घटनाक्रम में प्रतिदिन जो भी लेन - देन होते है उनको लिखा जाना ही लेखांकन (Accounting) है !
किसी खास उद्देश्य को हासिल करने करने के लिए घटित घटनाओ को अंको में लिखे जाने की क्रिया को लेखांकन (Accounting) कहा जाता है ! यहाँ घटनाओ से आशय उन क्रियाओ से है जिसमे रुपयों का लेनदेन होता है !

लेखांकन की प्रारंभिक क्रियाओ में निम्न तीन चरण होते है :

- **अभिलेखन (Recording) :** व्यापारी द्वारा प्रतिदिन के लेन - देन को जिस प्रारंभिक पुस्तक में लिखा जाता है ! उस क्रिया को अभिलेखन कहा जाता है ! अभिलेखन को हम रोजनामचा या Journal भी कहते है !
- **वर्गीकरण (Classification) :** अभिलेखन की क्रिया को अलग - अलग भागो में विभाजित कर लिखे जाने की क्रिया को वर्गीकरण कहते है ! इस क्रिया को खाता (Ledger) भी कहते है !
- **संक्षेपण (Summarising) :** वर्गीकृत मदो को एक जगह लिखे जाने की क्रिया को संक्षेपण कहा जाता है ! संक्षेपण को हम Trial Balance भी कहते है !

वर्तमान में व्यवसाय के आकार में वृद्धि और जटिलताओं के कारण प्रतिदिन होने वाले हजारो लेन - देनो को याद रखना कठिन है ! तथा सभी व्यवसायी अपने व्यापार में होने वाले लाभ - हानि , सम्पतिया , देनदारियां , लेनदारिया कितनी है इन समस्त बातो को वह जानना चाहता है जो लेखांकन (Accounting) से ही संभव है !

लेखांकन की विशेषताएं (Accounting Features) :

- लेखांकन व्यावसायिक लेन - देनो को लिखने और उन्हें वर्गीकृत करने की कला है !
- यह सारांश लिखने , विश्लेषण और निर्वचन करने की कला है !
- इसमें लेनदेन मुद्रा में व्यक्त होते है !
- यह लेनदेन पूर्ण या आंशिक रूप से वित्तीय प्रकृति के होते है !

लेखांकन के कार्य (Accounting Functions) :

लेखात्मक कार्य (Recordative Function) : व्यावसायी द्वारा किया जाने वाला यह प्रारंभिक व् आधारभूत कार्य है ! इसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से व्यवसाय की प्रारम्भिक पुस्तकों में लेखा करना तथा उनको खातों के अनुसार वर्गीकृत करना शामिल है !

व्याख्यात्मक कार्य (Interpretative Function) : लेखांकन के इस कार्य के अंतर्गत जो हित रखने वाले पक्ष होते है उनके लिए वित्तीय विवरण व् प्रतिवेदन का विश्लेषण एवं व्याख्या करना शामिल है ! प्रबंधको की दृष्टि से यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है !

संप्रेषणात्मक कार्य (Communicating Function) : लेखांकन के इस कार्य के तहत सभी पक्षकारो को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति व् अन्य सूचनाएं प्रदान की जाती है !

वैधानिक आवश्यकताओ की पूर्ति करना (Meeting Legal Needs) : लेखांकन का यह कार्य वैधानिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है ! क्योंकि यदि लेखांकन ठीक से रखा जाए तो विभिन्न अधिनियमों के तहत आयकर रिटर्न , बिक्रीकर रिटर्न , वार्षिक खाते तैयार करना आदि कार्य बड़ी आसानी से किये जा सकते है !

व्यवसाय की सम्पतियो की रक्षा करना (Protecting Business Assets) : यदि व्यवसाय में होने वाले सभी लेनदेनों का उचित लेखा रखा जाए तो व्यवसाय में मौजूद सभी सम्पतियो की रक्षा आसानी से की जा सकती है !

निर्णय लेने में सहायता करना (Facilitating Decision Making) : लेखांकन करने से हमें व्यवसाय के सभी आंकड़े सही से उपलब्ध हो जाते है जिससे हमें निर्णय लेने में सुविधा रहती है !

लेखांकन के उद्देश्य (Accounting Objectives) :

- लेखांकन का प्रथम उद्देश्य व्यवसाय में होने वाले सभी लेनदेनों का लेखा करना है ! जिससे की सही समय पर सही आंकड़े हमें मिल सके !
- लेखांकन से हमें व्यवसाय के लाभ - हानि का ज्ञान हो जाता है !
- लेखांकन के द्वारा प्रबंधको को वित्तीय सूचनाएं प्राप्त हो जाती है जिससे उन्हें निर्णय लेने में आसानी रहती है !
- व्यवसाय में प्राय कई पक्षकार होते है जैसे लेनदार , देनदार , प्रबंधक , विनियोजक आदि ! अतः इन सभी पक्षकारो को सही सूचनाएं प्रदान करना ही लेखांकन का उद्देश्य है !

उद्देश्य के आधार पर लेखांकन के प्रकार (Types of Accounting by Purpose) :

वित्तीय लेखांकन (Financial Accounting) : लेखांकन के इस कार्य के अंतर्गत वित्तीय प्रकृति के सोदो का लेखा किया जाता है ! इन लेखो के आधार पर ही लाभ - हानि खाता (P & L A /C) तथा चिठा (Balance Sheet) तैयार की जाती है !

लागत लेखांकन (Cost Accounting) : लेखांकन के इस कार्य के तहत किसी औद्योगिक इकाई में किसी वस्तु की कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत को आसानी से ज्ञात किया जा सकता है ! तथा इस कार्य से लगत पर भी नियंत्रण किया जा सकता है !

प्रबंध लेखांकन (Management Accounting) : लेखांकन की यह एक आधुनिक विधि है ! जब कोई लेखाविधि प्रबंध की आवश्यकताओ के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान करती है तब इसे प्रबंधकीय लेखांकन कहते है !

लेखांकन के नियम (Rules of Accounting) :

व्यवसाय में लेनदेन हेतु तीन नियम बनाये गए है ! जिन नियमो से हमें पता चल जाता है कि कोनसे खाते को Debit तथा कोनसे खाते को Credit किया जायेगा ! तो जानते है वे कोनसे नियम है -

1. व्यक्तिगत खाता (Personal Account) : किसी व्यक्ति या संस्था से सम्बंधित खातों को व्यक्तिगत खाता कहते है ! जैसे - Ram A/c , Mohan A/c , Bank A/c आदि !

- **व्यक्तिगत खाते का नियम (Rule of Personal Account) :** पाने वाले को नाम करो , देने वाले को जमा करो (Debit The Receiver and Credit The Giver)

इस खाते में पाने वाले को नाम अर्थात Dr किया जायेगा और देने वाले को Cr किया जायेगा !

2. वास्तविक खाता (Real Account) : वस्तु एवं सम्पति से संबंधित खातों को वास्तविक खाता कहा जाता है ! जैसे - Cash A/c , Building A/c आदि !

- **वास्तविक खाते का नियम (Rule of Real Account) :** जो वस्तु व्यापार में आती है उसे नाम करो और जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करो (Debit What Comes In and Credit What Goes Out)

इस नियम के तहत व्यापर में जो वस्तु आती है उसे नाम अर्थात Dr किया जायेगा और जो वस्तु जाती है उसे जमा अर्थार्त Cr किया जायेगा !

3. अवास्तविक खाता (Nominal Account) : खर्च तथा आय से संबंधित खातों को अवास्तविक खाता कहा जाता है ! जैसे - Rent A/c , Interest A/c आदि !

अवास्तविक खाते का नियम (Rule of Nominal Account) : सभी खर्च एवं हानियों को नाम करो तथा सभी आय एम् लाभों को जमा करो ! (Debit All Expenses or Losses and Credit All Income and Gains)

व्यवसाय में जो खर्च और हानिया होती है उसे नाम Dr किया जाता है ! और जो आय और लाभ होते है उसे जमा Cr किया जाता है !

लेखांकन की कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली (Important Terminology of Accounting) :

व्यापार (Trade) : कोई भी ऐसा कार्य में जिसमे वस्तुओ का क्रय - विक्रय लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है वह व्यापार कहलाता है !

पेशा (Profession) : कोई भी ऐसा कार्य जिसमे पूर्व प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है पेशा कहलाता है ! जैसे - डॉक्टर , वकील , सीए आदि !

मालिक (Owner) : वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जो व्यापार में आवश्यक पूंजी लगाते है , व्यापार का संचालन करते है , जोखिम उठाते है तथा लाभ - हानि के अधिकारी होते है वह व्यापार के मालिक कहलाते है !

पूंजी (Capital) : वह धनराशि जो व्यापरी , व्यापार को शुरू करने हेतु लगाता है पूंजी कहलाती है !

आहरण (Drawings) : जब कोई व्यापारी अपने व्यावसाय से रोकड़ या माल निकालता है तो इसे आहरण कहते है !

माल (Goods) : जिस वस्तु से व्यापारी व्यापार करता है वह माल कहलाता है !

क्रय (Purchase) : जो माल व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी से ख़रीदा जाता है क्रय कहलाता है !

विक्रय (Sales) : जो माल बेचा जाता है वह विक्रय कहलाता है !

क्रय वापसी (Purchase Return) : ख़रीदे हुए माल में से जो माल विक्रेता को वापस कर दिया जाता है वह क्रय वापसी कहलाता है !

विक्रय वापसी (Sales Return) : जब बेचे हुए माल में से कुछ माल वापस आ जाता है तो इसे विक्रय वापसी कहते है !

रहतियाँ (Stock): साल के अंत में जो माल बिना बीके रह जाता है वह Stock कहलाता है !

लेनदार (Creditors) : वह व्यक्ति या संस्था जो किसी अन्य व्यक्ति या संस्था को उधार माल या पैसा देती है वह ऋणदाता या लेनदार कहलाती है !

देनदार (Debtors) : वह व्यक्ति या संस्था जो किसी अन्य व्यक्ति या संस्था से उधार माल या पैसा लेती है ऋणी या देनदार कहलाती है !

सम्पतिया (Assets) : व्यापार में समस्त वस्तुए जो संचालन में सहायक होती है सम्पति कहलाती है !

खाता (Ledger) : लेजर एक बुक होती है जिसमे सभी प्रकार के खातों की एंट्री की जाती है !

डूबत ऋण (Bad Debts) : जब उधार की राशि वापस नहीं मिलती है तो उसे डूबत ऋण कहते है !

बट्टा (Discount) : व्यापारी द्वारा दी जाने वाली रियायत छूट या बट्टा कहलाती है !

व्यय (Expenses) : माल को खरीदने तथा बेचने के दौरान जो खर्चे होते है वह व्यय कहलाते है !

• E-COMMERCE

ईकॉमर्स, जिसे इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स या इंटरनेट कॉमर्स के रूप में भी जाना जाता है, इंटरनेट का उपयोग करके माल या सेवाओं की खरीद और बिक्री, और इन लेनदेन को निष्पादित करने के लिए धन और डेटा के हस्तांतरण को संदर्भित करता है। ईकॉमर्स का उपयोग अक्सर ऑनलाइन भौतिक उत्पादों की बिक्री को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, लेकिन यह किसी भी प्रकार के वाणिज्यिक लेनदेन का भी वर्णन कर सकता है जो इंटरनेट के माध्यम से सुविधाजनक है।

जबकि ई-व्यवसाय एक ऑनलाइन व्यापार के संचालन के सभी पहलुओं को संदर्भित करता है, ई-कॉमर्स विशेष रूप से वस्तुओं और सेवाओं के लेनदेन को संदर्भित करता है।

e-commerce शब्द "Electronic Commerce" का संक्षिप्त रूप है।

ई-कॉमर्स जिसे इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स के रूप में भी जाना जाता है, यह एक प्रोसेस हैं, जिसके द्वारा बिज़नेस और कन्जूमर एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से माल और सर्विसेस को बेचते और खरीदते हैं।

ई-कॉमर्स का इतिहास क्या है?

> ई-कॉमर्स की शुरुआत 1960 के दशक से शुरू हुई थी, जब बिज़नेसेस ने अन्य कंपनियों के साथ बिज़नेस डयॉक्युमेंट को शेयर करने के लिए Electronic Data Interchange (EDI) का प्रयोग शुरू किया।

1979 में, अमेरिकन नेशनल स्टैंडर्ड इंस्टीट्यूट ने ASC X12 को इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के माध्यम से डयॉक्युमेंट को शेयर करने के व्यवसायों के लिए एक युनिवर्सल स्डैंडर्ड के रूप में विकसित किया था।

ई-कॉमर्स की हिस्ट्री को eBay और Amazon के बिना सोचना असंभव है जो इलेक्ट्रॉनिक ट्रैन्सैक्शन को शुरू करने वाली पहली इंटरनेट कंपनियों में से थे।

1990 के दशक में eBay और Amazon के उदय से ई-कॉमर्स उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव आया। यूजर्स अब ई-कॉमर्स के माध्यम से किसी भी चीज़ को खरीद सकते थे।

ई-कॉमर्स के प्रकार क्या हैं?

Types of E-Commerce in Hindi

Types of e Commerce in Hindi – ई-कॉमर्स के प्रकार:

कई प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स हैं

सामान्यतया, जब हम ई-कॉमर्स के बारे में सोचते हैं, तब हम एक सप्लायर और क्लाइंट के बीच एक ऑनलाइन कमर्शियल ट्रैन्सैक्शन के बारे में सोचते हैं। हालांकि, यह विचार सही है, लेकिन वास्तव में ई-कॉमर्स को छह प्रमुख प्रकारों में बांट सकते हैं, सभी अलग-अलग विशेषताओं के साथ।

ई-कॉमर्स के 4 बुनियादी प्रकार हैं:

1) Business-to-Consumer (B2C):

इस बिज़नेस में एक बिज़नेस इंटरनेट पर प्रॉडक्ट या सर्विसेस को सिधे कन्जूमर को बेचता हैं।

उदाहरण के लिए आप Amazon, Flipkart या अन्य किसी साइट से कोई भी चीज खरीदते हैं।

2) Business-to-Business (B2B):

यहां कंपनियां इंटरनेट पर अन्य कंपनियों को प्रॉडक्ट या सर्विसेस को बेचती हैं।

इस प्रकार के ई-कॉमर्स में, दोनों पार्टिसिपेंट्स बिज़नेसेस होते हैं, नतीजतन, B2B e-commerce का वॉल्यूम और वैल्यू बहुत बड़ी हो सकती है।

3) Consumer-to-Consumer (C2C)

जब कन्जूमर अपने प्रॉडक्ट को किसी अन्य कन्जूमर को इंटरनेट पर बेचता हैं, तब इस ट्रैन्सैक्शन को Consumer-to-Consumer (C2C) कहा जाता हैं।

इसमें एक कन्जूमर अपनी पूरानी कार, बाइक जैसी अपनी प्रॉपर्टी को अन्य कन्जूमर को सिधे इंटरनेट के माध्यम से बेचता हैं।

आम तौर पर, ये लेन-देन थर्ड पार्टी के माध्यम से किया जाता है, जो ऑनलाइन प्लेटफार्म प्रदान करते है। इसके लिए Olx जैसी कई कंपनिया सर्विस के लिए कन्जूमर को चार्ज करती हैं या फ्री में सर्विस देती हैं।

4) Consumer-to-Business (C2B)

C2B में माल का आदान-प्रदान करने की परंपरागत समझ का एक पूर्ण उलट है।

इसका एक उदाहरण एक कन्जूमर वेब साइट बनाने के लिए ऑनलाइन रिक्वायरर्मन्ट देता हैं, और कई कंपनिया इसके लिए अच्छी किमत पर वेब साइट बनाकर देने के लिए ऑफर करती हैं। इसी तरह से हॉलिडे पैकेज या इन्शुरन्स भी इसके उदाहरण हो सकते हैं।

- आपको e payment system के बारे में क्या पता होना चाहिए

ई-कॉमर्स के क्या फायदे हैं?

1) **सुविधा बढ़ाता है:** ग्राहक अपनी सुविधा के अनुसार वस्तुओ की ऑर्डर अपने घर पर बैठ कर दे सकते हैं। और इसकी डिलेवरी उन्हे उनके घर पर ही मिल जाती

हैं। यह उन लोगों के लिए सबसे अच्छा खरीदारी ऑप्शन है जो हमेशा व्यस्त होते हैं।

2) **प्रॉडक्ट और किमत की तुलना कर सकते है:** खरीदारी करते समय, ग्राहक उस वस्तू की किमत को कई बेव साइट पर तुलना कर सकता हैं, जिससे बेहतरीन प्रॉडक्ट पर उसे अच्छी डिल मिल जाती हैं।

3) इसके साथ ही वे डिस्काउंट और कूपन जैसे अतिरिक्त लाभों का आनंद ले सकते हैं।

4) **स्टार्ट-अप के लिए आसान फंड:** कई लोगों को बिज़नेस करने की इच्छा होती है, लेकिन शॉप लेने के लिए पर्याप्त कैपिटल नहीं होता। फिजिकल स्टोर लिज पर काफी महंगे होते है। ई-कॉमर्स, व्यापार को शुरू करने और बढ़ने के लिए आसान बनाता है।

5) **प्रभावशाली:** ट्रेडिशनल बिज़नेस में बिज़नेस की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत सारे रिसोर्सेस खर्च हो जाते हैं और इससे प्रॉफीट कम हो जाता हैं।

   a. ई-कॉमर्स में रिसोर्सेसे का कुशलता से उपयोग किया जाता है क्योंकि अधिकांश बिज़नेस सर्विसेस ऑटोमेटेड होती हैं।

6) **कन्जूमर तक पहुंच:** ट्रेडिशनल बिज़नेस जैसे की दुकान की पहुंच काफी सीमीत होती हैं, जबकी इंटरनेट के माध्यम से वही बिज़नेस दुनिया भर के कन्जूमर को अपने प्रॉडक्ट और सर्विसेस बेच सकते हैं।

7) **प्रॉम्प्ट पेमेंट:** ऑनलाइन स्टोर पर इलेक्ट्रॉनिक या मोबाइल ट्रांजेक्शन का उपयोग करते हुए पेमेंट फास्ट होता हैं।

8) **विभिन्न प्रॉडक्ट को बेचने की योग्यता:** इंटरनेट पर बिज़नेस फ्लेक्सिबल हो सकता हैं और बिजनेस एक साथ कई प्रॉडक्ट या सर्विसेस बेच सकते हैं।

ई-कॉमर्स के नुकसान क्या हैं?

1) खराब क्वालिटी वाले प्रॉडक्ट: आप इंटरनेट पर प्रॉडक्ट को देखकर चेक नहीं कर सकते हैं। इसलिए, झूठे माक्रेटिंग और खराब क्वालिटी के प्रॉडक्ट आपके घर पर आने का रिस्क बना रहता हैं। हांल ही में मोबाइल के बॉक्स में मोबाइल की जगह पर साबुन आने की कई घटनाए सामने आई हैं।

2) अनचाही खरीद: ऑनलाइन स्टोर अपने प्रॉडक्ट को एक बड़ी संख्या में डिस्प्ले करते हैं और ऑनलाइन शॉपिंग की सुविधा के कारण, ग्राहक अनचाहे वस्तूए भी खरीद लेते हैं।

3) इंटरनेट स्कैमर: इंटरनेट एक अच्छी बात है, लेकिन कुछ लोगों ने इसका गलत कारणों से उपयोग करने का फैसला किया है। इंटरनेट पर किसी भी सामान को खरीदने से पहले उस वेब साइट और प्रॉडक्ट के बारें में जानकारी इकठठा करें।

4) सेल के बाद सपोर्ट की कमी: कई बार गलत या डिफेक्टिव प्रॉडक्ट आने पर उसकी कंम्प्लेट करने पर कन्जूमर को अच्छी सर्विस नहीं मिलती और इसके लिए उनका पैसा और समय बर्बाद हो जाता हैं।

5) माल की डिलिवरी में देरी हो सकती है: कभी-कभी प्रॉडक्ट की डिलीवरी में देरी हो जाती हैं और इससे कन्जूमर को असुविधा के साथ नुकसान भी हो सकता हैं।

6) सुरक्षा: ऑनलाइन प्रॉडक्ट खरीदने के लिए आपको अपने पर्सनल डिटेल्स के साथ क्रेडिट कार्ड की जानकारी भी देनी होती हैं। लेकिन कभी-कभी यह इनफॉर्मेशन चोरी होने का खतरा भी बना रहता हैं।

ई-कॉमर्स की विशेषताएं क्या हैं?

Ubiquity:

ई-कॉमर्स हर जगह और हर समय उपलब्ध होता है। कन्जूमर किसी भी समय अपने घर या ऑफिस से इंटरनेट कनेक्शन के माध्यम से प्रॉडक्ट खरीद या बेच सकते हैं।

Global reach:

ई-कॉमर्स पारंपरिक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सीमाओं के पार फैल सकता हैं और दुनिया भर के कन्जूमर बिज़नेस से कनेक्ट होते हैं।

ई-कॉमर्स वेबसाइट पर अब बहुभाषी अनुवाद करने की क्षमता होती है।

Universal standards:

यहां पर एक ही स्डैडर्ड का इस्तेमाल किया जाता हैं, जिसे इंटरनेट स्डैडर्ड कहां जाता हैं। इन स्डैडर्ड को दुनिया भर के सभी देशों द्वारा शेयर किए जाते हैं।

Richness:

एडवरटाइजिंग और ब्रांडिंग कॉमर्स का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ई-कॉमर्स वीडियो, ऑडियो, एनीमेशन, बिलबोर्ड, साइन और आदि डिलीवर कर सकते हैं। हालांकि, यह टेलीविजन टेक्नोलॉजी के रूप में समृद्ध है।

Interactivity:

ई-कॉमर्स टेक्नोलॉजी में मर्चंट और कन्जूमर के बीच दो-तरफ़ा कम्युनिकेशन होता हैं। आप ई-मेल या कॉल के द्वारा कम्युनिकेशन कर सकते हैं।

Information density:

अब सभी मार्केट में हिस्सा लेने वालों के बिच इनफॉर्मेशन कि क्वालिटी बेहद बढ़ी है। ऑनलाइन शॉपिंग प्रोसेस में कन्यूजर के पर्सनल डिटेल्स, प्रॉडक्ट की जानकारी और पेमेंट की जानकारी मर्चंट तक पहुंचती हैं और कन्जूमर को प्रॉडक्ट की जानकारी मिलती हैं।

Personalization/Customization:

किसी व्यक्ति के नाम, इंटरेस्ट और पिछली खरीदारी के आधार पर मैसेज विशिष्ट व्यक्ति को भेजा जा सकता हैं।

Social technology:

सोशल नेटवर्क पर कन्जूमर इनफॉर्मेशन को शेयर करते हैं और मर्चंट सोशल नेटवर्क पर उनके प्रॉडक्ट की एडवरटाइजिंग करते हैं।

ई-बिजनेस और ई-कॉमर्स में क्या अंतर है?

ई-कॉमर्स से तात्पर्य ऑनलाइन वाणिज्यिक गतिविधियों, इंटरनेट पर लेनदेन करने से है। इसमें इंटरनेट पर उत्पाद खरीदना और बेचना, मौद्रिक लेनदेन करना आदि जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। इंटरनेट का उपयोग ई-कॉमर्स के लिए किया जाता है।

जबकि ई-बिजनेस से तात्पर्य इंटरनेट के माध्यम से सभी प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों को करने से है। इसमें इंटरनेट पर कच्चे माल/माल की खरीद, ग्राहक

शिक्षा, उत्पाद खरीदने और बेचने, मौद्रिक लेनदेन करने आदि जैसी गतिविधियां शामिल हैं। ई-व्यवसाय में इंटरनेट, इंट्रानेट, एक्स्ट्रानेट का उपयोग किया जाता है।

दुनिया में सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियां कौन सी हैं?

ई-कॉमर्स व्यवसाय के आकार को मापने के कई अलग-अलग तरीके हैं। इसके कितने ग्राहक हैं? वे कितना राजस्व उत्पन्न करते हैं? कंपनी खुद कितनी लायक है?

यहाँ क्रमबद्ध दुनिया की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों की एक सूची है:

- Alibaba
- Amazon
- JD.com
- eBay
- Shopify
- Rakuten
- Walmart

E-commerce in India

भारत में ई-कॉमर्स:

वर्ष 2009 में भारत का ई-कॉमर्स बाजार लगभग 3.9 अरब डॉलर था, जो 2013 में 12.6 अरब डॉलर रहा। 2016-17 में ऑनलाइन बाजार में 19 फीसदी की बढ़ोतरी हुई थी।

भारत में जुलाई 2017 तक लगभग 450 मिलियन का इंटरनेट यूजर बेस है, जो आबादी का 40% हिस्सा है। दुनिया में दूसरी सबसे बड़ा यूजर बेस बनने के बावजूद, चीन (650 मिलियन, आबादी का 48%) के पीछे, संयुक्त राज्य अमेरिका (266 मिलियन, 84%) या फ्रांस (54 मिलियन, 81%) के बाजारों की तुलना में भारत में ई-कॉमर्स कम है।

● CYBER SECURITY

साइबर सिक्योरिटी क्या है? –

Cyber Security दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है. Cyber + Security.

जो कुछ भी internet, information, technology, data, network, application etc. से जुड़ा हुआ है. वो सब cyber के अन्तर्गत आता है और security का मतलब होता है.सुरक्षा प्रदान करना.

"ऐसी security जिसके अन्तर्गत internet या internet से जुड़े हुए computer/system, network, application, etc. के data को किसी बाहरी व्यक्ति या organization के बिना अनुमति के चोरी करने से बचने को ही Cyber security कहते है."

आज हम शिक्षा, entertainment, व्यापार, नौकरी, बैंक etc. हर क्षेत्र में electronic equipment जैसे:- computer, CCTV, smartphone etc.का use करते है. और इन electronic equipment में हार्डवेयर और सॉफ्टवेर दोनों का use होता है. जोकि इन्टरनेट से जुड़े होते है.

इन्टरनेट से जुड़े होने के कारण इन devices पर कभी भी और कही पर भी cyber attack पड़ सकता है. और collect किया हुआ data कभी भी चोरी हो सकता है इसी cyber attack से बचने के लिए cyber security की ज़रूरत पड़ती है. अब यहाँ ये भी समझना ज़रूरी है कि Cyber Attack क्या होता है.

"जब कभी किसी कंप्यूटर, कंप्यूटर से जुड़े equipment या नेटवर्क में किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा कंप्यूटर या नेटवर्क में पडे हुए data, information, को नुकसान पहुचाया जाता है या चोरी किया जाता है. वो भी बिना system/network की permission के. तो, इस प्रकार data चोरी होने को ही cyber attack कहा जाता है."

साइबर सिक्योरिटी के प्रकार - type of cyber security in hindi|

तो, अब बात आती है कि हम अपने सिस्टम की security किस-किस प्रकार से कर सकते है या फिर cyber security कितने प्रकार की होती
है.

Cyber Security हम निम्नलिखित प्रकार से कर सकते है:-

1. Application Security:-

application security में हम किसी नेटवर्क में कम कर रहे सिस्टम में use होने वाली application पर security लगते है. जब हम किसी application को install करते है. तो उसको एक सुरक्षा प्रक्रिया से गुजारा जाता है. जिसमे password ज़रूरी होता है. और उसको limited access किया जाता है. password protect होने के करण इसमें बाहर से unauthorized access कर पाना impossible होता है.

2. Network Security:- दो या दो से अधिक कंप्यूटर को wire या wireless तरीके से जोड़कर एक नेटवर्क तैयार होता है. इस नेटवर्क में हम systems/कम्पुटर पर data, information etc. का ट्रान्सफर करते है. इस नेटवर्क की security को ही नेटवर्क security कहते है. networking का use institute, industry, सरकारी कारखानों etc. में किया जाता है. जिसमे important data , इनफार्मेशन को share किया जाता है. इस कारण इसमें hacking का खतरा बना रहता है. इससे बचने के लिए network security का use किया जाता है. जिससे नेटवर्क में आने वाली threats, instruction और attack को रोका जाता है. एक high profile security के अन्तर्गत unauthorized access control, application security, network monitoring, data loss provision, etc. आते है.

3. Cloud Security:-

Cloud security cloud computing पर आधारित है. तो अब यहाँ पहले ये समझना ज़रूरी है कि cloud computing क्या होती है. जब कभी भी हमें कोई high configuration वाला game या software को अपने phone/computer में install करने के ज़रूरत पड़ती है तो उसी समय storage full का notification आता है तो ऐसे में हमें नये phone या सिस्टम की ज़रूरत पड़ती है. लेकिन cloud computing के आने से ऐसा ज़रूरी नही है. simple language में यदि में बताऊ तो, अब तक हम जो software program अपने कंप्यूटर, phone में रखते है अब उसकी ज़रूरत नहीं है.क्योकि अब ये सब web server से आसानी से मिलेंगी.

जब कभी भी हमारे phone/सिस्टम में storage की कमी होती है तो हम cloud का use करके उस cloud में data को store कर सकते है. cloud online/offline service होती है. web hosting के क्षेत्र में cloud का उपयोग करके web hosting service cloud hosting प्रस्तुत की गयी. अब क्योकि

ये ऑनलाइन service होती है तो इसको hack होने के भी chance होते है. cloud से related security को cloud security कहते है

cloud security में ऐसी Technic include होती है जिसमे internal और external दोनों प्रकार की cyber security के खतरे से सुरक्षित रहने के लिए cloud computing environment को safe रखती है.

4. Data security:- आज हमारा ज्यादार काम कंप्यूटर से ही होता है अब चाहे वो personal हो या professional हो. और ये सारा काम data के रूप में कंप्यूटर में store रहता है. इस data की security को ही data security कहते है. data security हम तीन तरह से कर सकते है:-

i. Data backup:-

इसमें समय-समय पर data का backup बनाकर रखके data को secure किया जाता है.

II. Data Encryption:-

इसमें data को encrypt किया जाता है data encrypt का मतलब होता है कि data की language को change करके store कर लिया जाता है और ज़रूरत पड़ने पर फिर से उसको decrypt कर लिया जाता है.

साइबर सिक्योरिटी क्यों महत्वपूर्ण है?- why is cyber security Necessary

What Is The Need Of Cyber Security :- **आज कंप्यूटर और इन्टरनेट का use इतना बढ़ गया है कि बिना इन्टरनेट के हमारी लाइफ अधूरी-सी है. आज हमारा कोई भी काम हो जैसे office work, personal work, shopping, money transaction, electric bill, mobile bill, etc. कोई भी काम हो, सारा work हम घर बैठे-बैठे इन्टरनेट का use करके करते है. और इन्टरनेट पर personal इनफार्मेशन, credit card, debit card etc. की इनफार्मेशन भी पड़ी रहती है. जिसकी यदि हम कोई security न रखे तो इसको कोई भी hack करके और उसका misuse कर**

सकता है. तो, हमारी personal इनफार्मेशन, data, etc. की safety के लिए cyber security की आवश्यकता पड़ती है.

महा गौरी कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान के ऑनलाइन एप्लीकेशन समझ अप्प ज्वाइन करने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद!

IF UNHAPPY-PLEASE TELL US

IF HAPPY PLEASE TELL OTHERS

हम आशा करते है की हमारे द्वारा दी गई जानकारी को आप अच्छी तरह समझ गए होंगे फिर भी अगर आपको और बेहतर तरीके से इसके बारे में जानकारी लेना है तो आप हमारे ऑनलाइन एप्लीकेशन के माध्यम से हमारे शिक्षकों से जुड़कर और बेहतर तरीके से समझ सकते है हमारे शिक्षक हमेशा आपकी सेवा में तत्पर है!

धन्यवाद